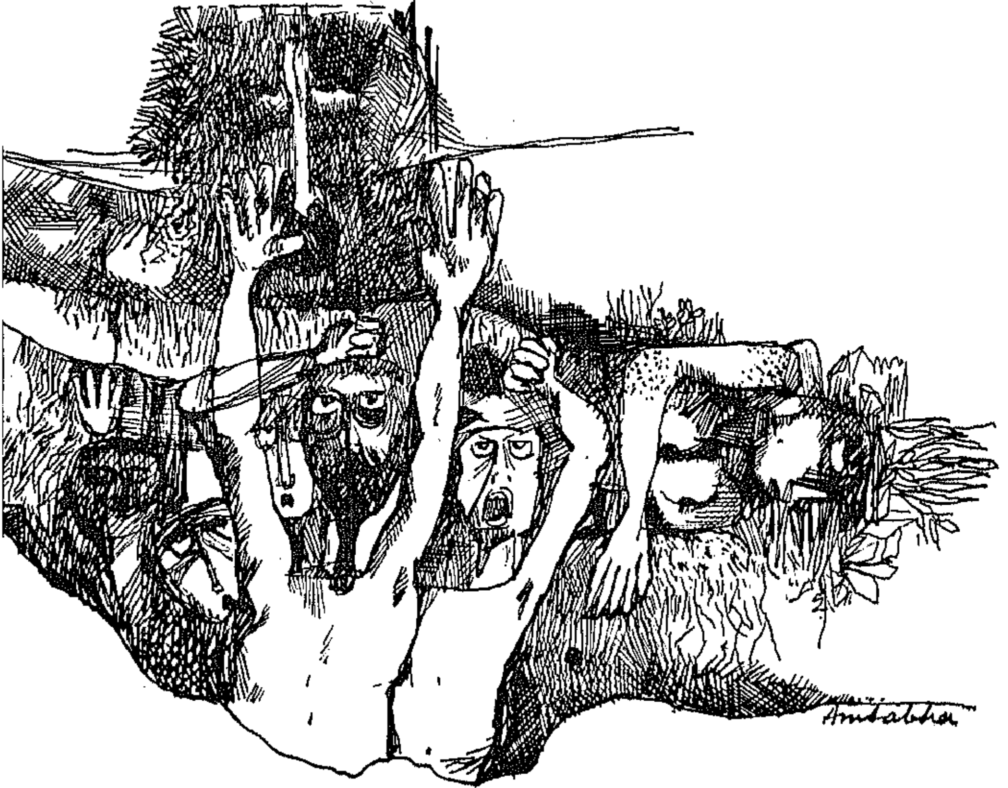
आन्दोलन

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'



आन्दोलन

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता—७०० ०४५

प्रथम संस्करण : १९७७ ई०

रचनाकाल : जनवरी, १९७४

प्रकाशक :
मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
१६२/ए/१३२, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता-७०० ०४५

आवरण :
अमिताभ वन्द्योपाध्याय

मुद्रक :
सिंह प्रेस
कलकत्ता-७०० ०४५

मूल्य :
तीन टाका

अभिन्न कवि-साहित्यकार

श्री अंजन सेन कें,

जे अयाचित भावें अमित एवं अशेष मैत्री देने छथि—

—उदय

पात्र-पात्री

जानकी, भरत, सुन्दर, नारद, नन्दी,
निर्लोभ, निर्मल, सुधीर और
पश्चस्वर

सुन्दर—हुनक ई पंक्ति अहाँ अनेको बेर आवृत्ति कैने छियन्हि। ई अहाँ कें एत्तेक नीक कियैक लगैत अछि ?

भरत—किछु कविता बुझबाक लेल काने सँ काज नहि चलि सकैत छैक, तकरा लेल आँखियोक प्रयोजन पड़ैत छैक; आ' किछु कविता क लेल दिमाग सँ सेहो काज लेमै पड़ैत छैक। मुदा किछु कविता एहन होइत छैक, जकर अर्थ बुझबाक हेतु समय केर पहिया तर आपन हृदय दान कए लहू बहाबै पड़ैत छैक......

सुन्दर—मुदा मास्टर साहेब! एखन धरि अहाँ.क मुहें जाहि सब कविता क प्रशंसा सुनल, सबटा मे कत्तहु ने कत्तहु प्रच्छन्न निराशाक स्वर अवश्य रहैत छैक। से कियैक ?

भरत—सुन्दर! किछु घटना एहन होइत छैक जकरा बूझै लेल जीवन कें समय क ओछाओन पर बिछाबै पड़ैछ। ईश्वर करथु अहाँ क परिचय निराशा सँ नहि होइक!

सुन्दर—ई हम नहि मानबई! हमरा पहिरबाक लेल वस्त्र अछि, खेबाक लेल खाद्य आ' बाजबाक लेल भाषा। मुदा हम चाहैत छी, देश भरि मे चलि रहल आन्दोलनक रूप किछु एहन होइक जे हमर अहाँक आ' सभक सबटा उद्वृत्त अधिकार छीनि कए बाँटि दी निराश लोकनिक भीड़ मे। ताहू लेल हमरा जानै पड़त, चीन्है पड़त जीवन क दुनू मुँह कें— आशा आ' निराशा दुनू कें।

भरत—आन्दोलन! आन्दोलन क सफलता लोगक मृत्युक मोलें भेंटैत अछि।

सुन्दर—मुदा कोनो आन्दोलन मे किछु दुर्घटना, किछु मृत्यु त अछिये!

भरत—कोनो-कोनो मृत्यु बड़ दुखद होइत छैक सुन्दर! तकर एकटा उदाहरण त हमहीं छी।

सुन्दर—अहाँ कियैक मृत हैब।

भरत—कारण हमरहु जीवन मे एहन एकटा आन्दोलन आयल छल जे बिहाड़ि जकाँ आयल आ' हमर सुख-चैन, देह-मन—सब किछुक हत्या क' कए चलि गेल।

सुन्दर—मुदा कथीक लेल छल ओ आन्दोलन ? तकर परिणतिये की भेलैक ?

भरत—जे भेल ताहि लेल हमर एहन हाल भेल अछि।

सुन्दर—भ' सकैछ 'अहाँ' क किछु क्षति भेल होइक, मुदा ताहि लेल आन्दोलन क कोन दोष ? बिनु आन्दोलनक त किछु भेंटबे नहि करैत अछि! [भरत हँसैत छथि।] हँसैत कियैक छी ?

भरत—अहाँ क गपसप सुनि कए ओ नाटकीय दिन सब मन पड़ि जाइत अछि। [मृदु-मन्द हँसैत] एक दिन हम सब सपने टा देखैत छलहुँ—हमर भाषा कें आन सब भाषा क समान मर्यादा देल गेल अछि; मिथिला क घर-घर मे शिशु मातृभाषा क माध्यमे पढ़ि रहल अछि, हमर साहित्य, शिल्प, संगीत विश्व क दरबार मे स्थान बना लेलक अछि। आइ सँ तीस बरस पहिने एहन सपना हमहीं नहि, बहुत गोटे देखैत छलथिन्ह। चारूकात जुलूस, हड़ताल, नारा... मैथिली भाषा जिन्दाबाद... हम्मर भाषा—मैथिली... ताहि दिन मे हजारो लोग एकस्वर मे कहैत छल......

[नेपथ्य सँ नारा आ' कोलाहलक स्वर क्रमशः स्पष्ट भ' उठैत अछि। मंच क आलोक-रेख बुता जाइत अछि। मात्र टेबुल लैम्प बरैत रहैत अछि। शिक्षक-छात्र दुनू गोटे निस्पंद रहैत छथि। नेपथ्य सँ अनेक कंठ क नारा सुनल जाइत अछि—

"मैथिली भाषा जिन्दाबाद! जिन्दाबाद, जिन्दाबाद!!
हमर भाषा अमर हो! अमर हो, अमर हो!!
मैथिलीक शत्रुक नाश हो! नाश हो, विनाश हो!!"

इति मध्य 'आबि गेलाह... हे ह्यैह आबि रहल छथि' आदि ध्वनि सुनल जाइत अछि। पुनः नारा सुनल जाइछ :

"मिथिलाक नेता निर्लोभ-जी; युग युग जीवथि, युग युग जीवथि!
निर्लोभ बाबू जिन्दाबाद! जिन्दाबाद, जिन्दाबाद!"

नाराबाजी धीरे-धीरे मद्धिम होइत-होइत बन्द भ' जाइछ।]

पश्चस्वर—[अन्धकारहि मे नाटक क भूमिका-स्वरूप एकटा कंठस्वर सुनल जायत।] आइनस्टाइन कहने छलाह जे स्थान क संगहि संग कालो पदार्थक रूपक परिवर्त्तन क कारण भ' सकैत अछि। असल मे ई बात हुनकहु सँ पहिने कोनो नाट्यकार कें कहबाक छलन्हि। ओना कखनहु-कखनहु हमरा सन्देह होइत अछि आइनस्टाइन नाट्यकारे छलाह। जे हो! हमर त विचार इयैह जे कतबो समय क व्यवधान राखू— किछु घटना बदलैत नहि अछि; आ' दोसर दिसि, कखनहु ईहो होइत छैक जे किछुये काल मे मनुष्य क अनेक नीक-बेजाय बात वास्तव-वसन्तक बिहाड़ि मे झरि जाइत अछि। किछु मनुष्य बदलैत छथि, किछु घटना; किछु आन्दोलन क उद्देश्य-विधेय क्रिया कें बिनु कहनहि बदलि जाइत अछि। [किछु काल चुप रहि कए] एतय, एहि नाटक क पात्र सब कें आइ सँ तीस बरस बादक मंच पर राखल गेल अछि। अर्थात्, असल मे ई नाटक तीस बरस बाद लिखब उचित छल; किन्तु एकर जन्म अवांछित शिशु जकाँ पहिनहि भ' गेल अछि। तैयहु, शिशु जखन बेबस असहाय शिशुए थीक, तखन तकरा ग्रहण त करहिटा पड़त। तँ, कल्पना क संदूक मे तीस बरस नुका कए चलू चुप्पेचाप आगाँ बढ़ी!

[वक्तव्य शेष हैबाक संगहि संग कुर्सी पर उपविष्ट भरत टेबुल लैंप कें लेसि दैत छथि। मंच क एक कात एक टेबुल आ' दूटा कुर्सी दृश्यमान होइत अछि। सुन्दर, भरत क छात्र, प्रविष्ट होइत छथि।]

भरत—सुन्दर! आइ अहाँ आबै मे बड़ देर कैलहुँ।

सुन्दर—मास्टर साहेब! हमरा देर भ' गेल—किताब क दोकान मे। देखि-

औक ने—आइ कालिह मैथिली क छात्र संख्या तत्तेक ने बढ़ि गेल छैक जे कोर्सक कविता-संग्रह बजार मे अबितहि बिका जाइत अछि !

भरत—त अहाँ कीनि सकलहुँ कि नहि ?

सुन्दर—जी हँ हमरा भेंटि गेल। मुदा लाईन मे ठाढ़ होमै पड़ल छल, तैं...

भरत—देखू त एहिबेरुका संकलन केहन भेल अछि ! [सुन्दर सँ पुस्तक हाथ मे लैत] पोशाक सँ त नीके लगैत अछि। [सुन्दर सँ] एहि बेरि कविता क सूची मे कोनो परिवर्त्तनो भेल अछि की ?

सुन्दर—जी हँ ! राजकमल चौधरी क दोसरे एकटा कविता लेल गेल छन्हि।

भरत—कोन ?

सुन्दर—फुटनोट मे देखलहुँ इयैह हुनक अन्तिम कविता छलन्हि। अबैत-अबैत ओ पढ़ियहु लेलियन्हि !

भरत—अहाँ कें कोन पंक्ति बेसी नीक लागल ?

सुन्दर—"...हमर चारू कात पसरल ई नील-लोहित आकाश
हमर ई काव्यकन्या, हमर ई पृथ्वीवधू, हमर ई लौकिक आ' दृश्य प्रकृति
हमर जीवन आ' हमर कविता मे
जीवित छथि, जागल छथि
एहि नागरिक यान्त्रिक निरीह पशुवत् जीवन कें
कविता बनयबा मे
हमरे जकाँ, हमरे कवि जकाँ लागल छथि, जागल छथि
प्रकृति।"

भरत—आइ मन पड़ैत अछि... जखन कलकत्ता मे कालेज मे पढ़ैत छलहुँ, कहियहु-कखनहु चाह क अड्डा पर भेंट होइत छलाह ओ। हमरा सभक अनुरोध पर ओ कखनहु आपन नवीनतम कविता सेहो सुना दैत छलाह। हुनक स्वर जेना एखनहु गूँजि रहल होइन्ह :

"देबा-लेबाक ई सांसारिक व्यवस्था
आब एहि वयस मे
स्वाभाविक नहि हैत"

सुन्दर—ई त सैह अमरनाथ 'निर्लोभ' जी छथि ने जे आइ मैथिलीक केन्द्रीय साहित्य संसदक प्रधान छथि ?

भरत—हँ; ई एखन साहित्य-सर्जन-कारखानाक एकच्छत्र अधिपति छथि।

सुन्दर—सुनल अछि, आइ मैथिली कें जे सम्मान प्राप्त छैक ताहि लेल हुनक त्याग सब सँ बेसी छलन्हि ?

भरत—एक समय हमहूँ सैह सुनने छलियन्हि।

[संगहि संग टेबुल लैम्पक प्रकाशो बन्द भ' जाइत अछि। दरबाजा पर कराघात क शब्द सुनल जाइछ। सुन्दर प्रस्थान करैत छथि एवं संपूर्ण मंच आलोकित होइत अछि। मंच क दोसर भाग मे एकटा छोटछीन चौकी पर भरत सूतल देखल जाइत छथि। दरबाजा पर पुनः शब्द होइत अछि। भरत क नीन टूटि जाइत छन्हि।]

भरत—[औंघाइत] के ? [उत्तर नहि पाबि] जानकी !! [चारूकात देखैत] ई कतय गेलीह भोरे भोर ?

जानकी—[प्रविष्ट होइत] की कहैत छी ?

भरत—कनेक देखू त के आयल अछि !

जानकी—जखन अहाँ के उठै पड़बे करत, त आलस्य कैने कोन लाभ ? हम ओम्हर......

भरत—[अर्धोत्थित भए दुनू कान पर हाथ धरैत] बाप रे बाप ! ई हमरा बूझल रहितैक जे भोरे भोर अहाँ क मधुर भषण सुनै पड़त त अहाँ सँ दरबाजा खोलै कहितहुँ थोड़बे ? हे, हमरा माफ करू आ' अहाँ जाउ भनसा घर मे ! [पुनः कराघात क शब्द] हमहीं जाइत छी !

[जानकी कपट क्रोध देखा कए प्रस्थान करैत छथि। भरत हुनकहि दिसि देखैत रहि जाइत छथि।]

नारद—[नेपथ्य सँ कराघात करैत] भरतबाबू छी यौ ? भरतबाबू ?

भरत—इयैह ऐलहुँ। [दरबाजा खोलि कए] आ हा-हा-हा-हा ! आयल जाउ ! आयल जाउ !!

नारद—[प्रविष्ट भए] 'जय मैथिली' कहू ! हमरा सभक हेतु त सैह सही अभ्यर्थना भेल, कि नहि ?

भरत—ठीक ! जय मैथिली !! त आउ ने, भीतर आउ ! ओत्तहि कियैक ठाढ़ छी ?

नारद—हँ, इयैह...

भरत—[कुर्सी पर बैसा कए] आब कहू, की समाचार ? बहुत दिन बाद दर्शन देलहुँ !

नारद—ओना त सबटा कुशले-मंगल......

भरत—[बाधा दैत] थम्हू ! पहिने हम अहाँ क लेल चाह क बन्दोबस्त करी। जानकी ! हे ये ! सुनैत छियैक ?... [ई कहैत निष्क्रान्त होइत छथि।]

[नारद टेबुल पर सँ एकटा पत्रिका उठा कए देखैत रहैत छथि। दरबाजाक बाहर सँ क्यो विचित्र स्वरें न्यूजपेप' एतबा कहैत घर क मध्य अखबार फेंकैत अछि। नारद अखबार पढ़ै लगैत छथि भरत प्रविष्ट होइत अछि।]

नारद—लियह ! अखबारो आबि गेल अछि।

भरत—की सब खबरि छैक ?

नारद—[अखबार कें टेबुल पर धरैत] खबरि एहि मे की रहत ? से त हमरा सँ पूछू !

भरत—से कोन संवाद आनलियैक अछि ?

नारद—बैसू ने, त कहैत छी ! [भरत चौकी पर बैसि जाइत छथि।] अहाँ त एहि बीच मे संघक मीटिंगो आर मे नहियें ऐलहुँ !

भरत—अहाँ त जानितहि छी, एहि समय मे स्कूल क काज कत्तेक बढ़ि जाइत छैक। परीक्षा क समय थिकैक।

नारद—नहि, ताहि लेल कोनो अथी नहि ! तखन पहिलुका मीटिंग मे रहितहुँ त नीक हैतैक।

भरत—ई कहू— पछिलुका मीटिंग मे की सिद्धान्त लेलहुँ...... फंशन भ' रहल अछि कि नहि ?

नारद—हँ हँ, से त भइये रहल अछि। आ' ताहि लेल त हम ऐवे कैलहुँ। संघ क फंशन त कालिह् आ' परसू— दुनू दिन हैत।

भरत—कालिहये सँ शुरू हैत ?

नारद—हँ! ओम्हरुका सब व्यवस्था भ' गेल अछि। हमहीं सब सबटा क' लेने छियैक।

भरत—[हँसैत] त हमरा लेल कोन काज छोड़लहुँ, से ने कहू!

नारद—[हँसैत] सैह त कहै ऐलहुँ। [थम्हैत] मन अछि, गत वर्ष सब क्यो अहीं क घर मे ठहरल छलाह ?

भरत—हँ, हँ... ओसब हमर पहिलुका बासा मे ठहरल छलाह, वैह चौक लगबला......

नारद—ओसब अहाँ क आतिथेयताक एत्तेक जय-जयकार कैने रहथि जे ऐहि बेरि जखन प्रश्न उठल जे बाहर क अतिथि लोकनिक ठहरबाक व्यवस्था कतय कैल जाइन्हि त हमहीं सब सँ कहलियन्हि जे लोगक प्रशंसा सुनबाक हो त भरत बाबू क डेरा सँ नीक जगह कत्तहु नहि भेंटत।

भरत—[किछु चिन्तित जकाँ] से त नीक बात! मुदा... हम सोचैत छी जे...

नारद—की सोचि रहल छी ?

भरत—बात ई अछि जे ओ सब बाहर सँ आबि रहल छथि, तैं हुनका सब कें कोनो वस्तुक अभाव नहि हैबाक चाहियन्हि। आ' एखन त हमर......

नारद—त अहाँ क घर मे अभाव कियैक हैतन्हि हुनका लोकनि कें ?

भरत—पहिने जतय रहैत छलहुँ, ओतय त दूटा बेस बड़-बड़ कमरा आ' भनसा घर छल और ताहि पर एसगरे छलहुँ। मुदा एहि एक मास सँ त एहन ने छोट एकटा कमरा मे आबि गेल छियैक जे...। ताहि पर हमर पत्नी सेहो गाम सँ......

नारद—[जानकी चाह नेने प्रविष्ट होइत छथि। नारद हुनका देखि कए कहैत छथि] ऐहि बेरि त और नीके बात जे बहिन दाइ छथि। पाहुन सब कें एहि बेरि खुऐबा मे असुविधे नहि हैत— पछिलुका बेरि जकाँ......

भरत—से त ठीके ! [जानकी चाह टेबुल पर राखैत छथि ।] लियह ! चाह पीबू ! [दुनू गोटे चाह क प्याला उठा लैत छथि ।]

नारद—[चाह पीबैत] इयैह देखू ने ! एहन चाह अहाँ बना पाबितहुँ ? ई त बहिने दाइ छथि जे...

भरत—से त भाइ, स्त्री जाति हाथ मे मौधक पुरिये नेने एहि धरती पर पैर राखैत छथि । तैं हमर चाह अहाँ कें नीक कियैक लागत ?

[दुनू गोटे एहि बात पर हँसि दैत छथि । जानकी लजा जाइत छथि ।]

नारद—हमरा पहिने पता रहितैक जे ई गाम सँ आबि गेल छथि त अहाँ सँ हम बात करितहुँ थोड़बे ?

जानकी—कोन बात क चर्च भ' रहल अछि ? पाहुनो सब दय की ने कहैत छलहुँ ?

नारद—[भरत सँ] अहीं कहियन्हु ने !

भरत—[गला खखारैत] कालिह आ' परसू एतहुका मैथिल सेवी संघ क फंशन अछि। एतहि आगाँ क कार्यक्रम ठीक कैल जैतैक, आन्दोलन क कोना की रूप देल जाइक ताहि पर बात-विचार हैतैक !

जानकी—से त नीक बात !

भरत—गत वर्ष एहि लेल बाहर सँ जे क्यो आयल छलाह, हमहीं तनिका सभक ठहरबाक भार गछने छलियन्हि !

नारद—और से एत्तेक सफल रहलैक जे अहू बेरि हम सब हिनकहि पुनः से भार उठाबे कहैत छियन्हि !

जानकी—[हँसैत] जखन अतिथि लोकनि हिनक भानस खा' कए 'प्रशंसा' कैने छलथिन्ह त हुनका लोकनि कें प्रसन्न करब कोनो कठिन काज नहि !

भरत—[कपट क्रोधें] कियैक ? अहाँ की सोचैत छियैक हमर भानस खराब होइत छैक ?

जानकी—चलू ! कम सँ कम एकहु बेरि त हमर मन क बात बूझि गेलहुँ !

[कहि कए हँसि दैत छथि ।]

भरत—[नारद सँ] अच्छा; अहीं कहू त— गत वर्ष अहूँ त एक साँझ हमरहि घर मे खैने छलहुँ ! हमर मानस दय ई जे कहैत छथि से सत्य थिकन्हि ?

नारद—ओना त पहिलुका बरस सब ठीकेठाक भेल छल। तखन मैथिली-प्रेमक धधकैत आगि मे तरकारी कनेक झरकि गेल छल। आ' दालि मे जतबाक नोन कम छल से हम सब ताहि मे मैथिलीये प्रेम मिला कए ठीक क' नेने छलियैक ! [कहैत-कहैत नारद हँसै लागैत छथि। जानकियो हँसि दैत छथि।]

भरत—[असहाय जकाँ दुनू गोटेक दिसि देखैत] बुझाइत अछि जे अहाँ दुनू गोटे मिलि कए षडयन्त्र कैने छी।

नारद—[हँसी कें सम्हारैत] से त कैनहिए छी। [जानकी सँ] हँ; त बहिन दाइ, पाहुन सभक ठहरबा दय की कहैत छियैक ?

जानकी—एहि मे कहबाक कोन गप छैक ? ओ सब एत्तहि रहताह !

नारद—[आनन्दित भए—भरत सँ] देखलहुँ ? अहाँ सोचितहि रहि गेलहुँ आ' हम आर्डर निकलबा लेलहुँ।

भरत—हँ ! हाइकमांड जे कहथि ! मुदा कय गोटे हैताह ओसब ?

नारद—आधा सँ बेसी लोग कें त हम सब दोसर जगह पर ठहरा रहल छियन्हि। एतय मात्र नीक आ' उच्चकोटिक लोग क लेल व्यवस्था करै पड़त !

भरत—एत्तहु अहाँ सब ऊँच-नीच क व्यवधान क' रहल छी ?

नारद—भरत बाबू ! जावत धरि समाज क सब स्तर मे व्यवधान अछि, तावत हम कोना तकरा अस्वीकार करू ?

भरत—जे होइक ! ओना कत्तेक गोटे हैताह ओ सब, से नहि कहलहुँ ?

नारद—कम सँ कम चारि पाँच गोटे त...

भरत—[सोचैत] चारि-पाँच गोटे...? [थम्हि कए] त ऐताह कखन ?

नारद—ओ सब त आइये आबै जैताह, तखन साँझ सँ पहिने कयो एत्तय नहि आबि सकताह ! से नहि आबथि, ककरहु द्वारा सभक सामान एत्तहि

पहुँचबा देब हम !

भरत—ओ सब तावत् धरि करताह की ?

नारद—सब क्यो स्टेशने सँ सोझे संचालन-समिति क मीटिंग मे चलि जैताह ? कालिह आ' परसू त फंशाने हैत। जनता कें आकृष्ट करै लेल आन्दोलन क असल रूप-रेखा त आइये ठीक करताह नेता लोकनि !

भरत—जनता कें छोड़ि आन्दोलन कोना हैत नारद भाइ ? आन्दोलन त जनता क लेल आ' जनता क सहायते सँ होइत छैक ! तखन आइ अहाँ सब अपना मे जे किछु सोचि-बिचारि कए स्थिर करब, कालिह जनता तकरा मानि लेत, से कोना बुझलहुँ ?

नारद—[हँसैत] नहि ! एत्तेक दिन संघ-सोसाइटी मे रहियहु कए अहाँ आन्दोलन क सार-तत्त्व नहि बुझलहुँ ! भरत-भाइ ! जनता सब दिन सब देश मे आन्हरे होइत अछि। आ' तकरा सभक आँखि होइत छथि नेता लोकनि। आँखि नहि ताकय, पथ नहि बताबय त अहाँ आगाँ कोना बढ़ब ?

भरत—[म्लान रूपें हँसैत] से त हम नहि जानैत छी ! हम त इयैह बुझैत छियैक जे रक्त क संचार नहि हो, माथ विद्रोह करै, हृदय हारि कए बैसल रहै त आँखि, कान, नाक आ' मुँह कोनो काज क नहि रहि जाइत छैक, चाहे ओ कतबो आकर्षक हो ! जनता नहि साथ दैक त ओ आन्दोलन आन्दोलने नहि हैत, चाहे तकर प्लान कतबो सुन्दर हो !

नारद—छोड़ू ई सब तर्क ! एत्तेक वर्ष भ' गेल इयैह सब करैत-करैत। अहिना अधिकारो माँग क पूर्त्तियो भेल अछि। आब देखू— आन्दोलन क एहि अन्तिम चरण मे की होइत अछि ! [थम्हैत] तखन अहाँ कें जे इन्तजाम करबाक अछि, करू। हमहूँ जाइत छी मीटिंग क कोना की व्यवस्था भेल अछि से देखै लेल।

भरत—ठीक अछि !

नारद—आ' जौं सम्भव हो त मीटिंग मे अहूँ आबि जाउ !

भरत—[हँसैत] हम त भाइ, ने नेता छी, ने ज्ञाता ! हम सब तोता छी। जे

नारा रटायब, सैह दोहराबैत रहब। तैं हम मीटिंग मे जा' कए की करब ?

नारद—नहि-नहि, से कियैक ? अहाँ सन कवि एहि शहर मे रहितहु हमरा सभक साथ नहि रहथि त से कोना सम्भव ? अहाँ तोता कियैक हैब ? एहि शहर मे कै गोटे कवि अहाँ क बराबरी क' सकैत छथि ?

भरत—अहो भाग्य, अहाँ बाहर क कवि लोकनि सँ तुलना नहि कैलहुँ ! चलू ! कत्तहु त श्रेष्ठ छी, चाहे ओ कुँइये मे कियैक ने हो !

नारद—[जानकी सँ] देखैत छी ने बहिन, सुनैत छियन्हि ने हिनक गपसप ?

जानकी—से आइ कोनो नव सुनि रहल छियन्हि थोड़बे ?

नारद—हिनकर गपोसप हिनकर कविते जकाँ होइत छन्हि, आधा त हमर बुद्धि सँ बाहरहि रहि जाइत अछि !

[सब क्यो हँसि दैत छथि।]

अच्छा ; त हम चललहुँ एखन। साँझ क पहर सब कें नेनहि आयब। जय मैथिली ! [प्रस्थित होइत छथि।]

[भरत किछु सोचैं लागैत छथि। सोचैत-सोचैत कुर्सी पर जा' कए बैसि जाइत छथि। जानकी बिछौना साफ करैत छथि। घरक काज करैत-करैत बीच-बीच मे भरत क दिसि देखैत छथि। भरत जानकी क दिसि ध्यान नहि दैत छथि।]

जानकी—एत्तेक की सोचि रहल छी ?

भरत—हूँ ? [चुप रहैत छथि।] सोचैत छी जे एत्तेक गोटाक व्यवस्था कोना हैत ?

जानकी—ताहि मे एत्तेक सोच-विचार क कोन प्रयोजन अछि ? अहाँ बजार सँ चीज-वस्तु ल' आनू ! भानस क भार त हमहीं उठा सकब !

भरत—आ' ओ सब रहताह कतय ?

जानकी—कियैक ? अही घर मे !

भरत—आ' हम सब ?

जानकी—हम सब कहुना कए भन्से घर मे रहि लेब ! तीने दिनक त प्रश्न छैक।

भरत—[दीर्घश्वास त्यागि] हूँ !

जानकी—हूँ की ?

भरत—अहाँ त सबटा समस्या क समाधान एकहि मिनट मे क' देलहुँ ! मुदा...

जानकी—मुदा की ?

भरत—सोचैत छी बन्दोबस्त करबाक लेल जत्तेक पाइ क आवश्यकता हैत, ओत्तेक कतय सँ आओत ? बैंक मे जे छल से त सबटा गामे पठाबै मे शेष भ' गेल अछि ! तैयहु जौं कोनो लाभ होइत ! माय कें बचा त सकलियन्हि नहि ?

जानकी—[काज करब बन्द कए भरत क पास आबि कए] अहाँ क कोन दोष ? चेष्टा त कम नहि कैलहुँ, मुदा मरब-बाँचब त ईश्वरे क हाथ मे छलन्हि ! ताहि लेल जीवन कें सरापने कोन लाभ ?

भरत—से कतय कहैत छी हम ? जे जीवन हमरा सँ माय कें छीनि लेलक वैह जीवन त हमरा लग अहूँ कें आनि देलक अछि।

जानकी—जीवन सब दिन अहिना होइत अछि— स्वार्थी, हिसाबी लोग जकाँ। किछु दैत अछि त किछु लैयो लेत अछि ! देखब, एक दिन अहिना हमरहु ल' लेत !

भरत—चुप रहू ! अहाँ बड अशुभ बात सब बाजैत छी !

जानकी—एहि मे शुभाशुभक कोन गप...?

भरत—अहाँ चलि जायब त हमर के रहत ?

जानकी—बिना किछु देने मृत्यु हमरा उठा लेत थोड़बे ?

भरत—की दैत अहाँ क जगह मे ? अहाँ क रिक्तता कि कहियो भरल जा सकैछ ?

जानकी—क्यो न क्यो त रहबे करत ! हम नहि रहब त हमर पेट मे जे अछि, से रहत !

भरत—छोड़ू मरैबला गप ! पहिने ई त कहूँ— हमरा सभक जे बेटा हैत, तकर नाम की राखब ?

जानकी - बेटा हैत से कोना कहब ? बेटियो भ' सकैत अछि !

भरत—अच्छा, बेटी हैत त की नाम राखब ?

जानकी—[सोचैत] म्-म् ! बेटी क नाम हैत... 'वैदेही' !

भरत—आ' बेटा हैत त ?

जानकी—अहीं कहू ?

भरत—हम कहू ? हँसब त नहि ?

जानकी—हँसब कियैक ?

भरत—बेटा क नाम राखब 'आन्दोलन' ! [दुनू हँसि दैत छथि। पुनः दुनू गोटे चुपचाप सोचै लागैत छथि।] ऐ ! [जानकी सुनैत नहि छथि।] ऐ आन्दोलन क माय ! सुनैत नहि छी ?

जानकी - की ? कहू ने ?

भरत—कहैत छलहुँ, चारि-पाँच गोटे क लेल व्यवस्था कोना करियन्हु ? कल्हुका खर्चा क बाद बाँचल त अछि पाँचे गो टाका। ताहि सँ त किछु नहि हैत !

जानकी—से अहाँ चिन्ता जूनि करू ! हमरो पास त किछु अछिये !

भरत—अहाँ क पास कोना रहत ? अहाँ क पास जे छल से त पछिलुका राति खर्च भ' गेल छल ! तखन ?

जानकी—से अहाँ कोना जानि गेलहुँ जे कत्तेक छल हमरा लग ? [गम्भीर भए] हमहीं की से जानैत छलहुँ ?

भरत—से हैबो करत त...

जानकी—त की ? अहाँ कें त किछु दिन मे दरमाहा भेंटबे करत ! तखन हमरा पुनः द' देब ! एकहि साथ त दू-दू मास क टाका भेंटत; हड़ताल त आब शेषे भ' गेल अछि !

भरत—एत्तेक शीघ्र जौं पाइ नहि देथि ओ सब तखन ? हड़ताल मे जे स्कूल बन्द रहल ताहि मे घाटा त स्कूल कें भेले छैक। तैं जौं...

जानकी—तखन चारि तल्ला मे जे पंजाबी परिवार रहैत अछि, ओकरहि सब

सँ पैंच ल' लेब। ताहि सँ ई काज चलि जायत...

भरत—उधार क खुशी ल' कए पाहुन लोकनि कें उपहार दियन्हु? नहि! [सोचैत] आ' सेहो कोना हैत? जावत घुरैबाक उपाय नहि सूझय, तावत् उधार कोना ली?

जानकी—अच्छा, ठीक अछि! अहाँ कें एत्तेक सोचै नहि पड़त। एखन हमरहि जमा कैल पाइ सँ काज चलाउ! बाद मे जे हैतैक से देखल जैतैक...!

भरत–मुदा ई हमरा समझा दियह! अहाँ क पास पाइ आयल कोना? जे किछु छल से त किछु दिन पहिलहि अहीं सँ ल' कए कथी पर ने खरच कैने छलहुँ! तखन फेर कतय सँ...?

जानकी—[घबड़ा कए] न् नहि... म्-माने... [कपट क्रोध सँ] स् से अहाँ सुनि कए की करब जे कतय छल ओ पाइ? अहाँ कें हम पाइ द' देब; अहाँ हमरा बाजार सँ सामान आनि दियह, बस्!

भरत—ठीक अछि! दियह पाइ त हम जाइत छी...!

जानकी—एखन?

भरत—त आर कखन देब? ओ सब त साँझेखुन आबि जैताह!

जानकी—[घबड़ा कए] एखनहि कोना... माने...

[दरबाजा पर कराघात क शब्द होइछ।]

चेह देखू— के ऐलाह!

[भरत दरबाजा खोलैत छथि। जानकी दरबाजा क ओहि कात चलि जाइत छथि। सुधीर प्रविष्ट होइत छथि।]

सुधीर—की भाँरोत बाबू? की खाँबोर?

भरत—आर सब खबरि त नीके दादा, अपनहिटा खबर बेजाय। अहाँ क की हालचाल?

[एहि बीच मे जानकी दुनू गोटा क नजरि बचा कए प्रस्थित होइत छथि।]

सुधीर—बांगलाय बोलले 'भॉन्दो नाँय', मैथिलीते बोलले 'कुशले मंगल छैक।'

भरत—तखन मैथिलीए मे बाजू।

सुधीर—हम जतबाक चेष्टा करैत छी बंगला मे बात करबाक, अहाँ हमरा ततबहि मैथिली मे बजाबै चाहैत छी ! आरे भाइ, एत्तेक दिन दड़िभंगा मे रहलहुँ ताहि सँ की ? मानुष तो आमि बांग्लार !

भरत—के कहलक अहाँ बंगाल क छी ? अहाँ त बेसी मिथिले क थिकहुँ ! जनम-करम त सबटा दड़िभंगे मे भेल !

सुधीर—[हँसैत] जनम-करम सँ किछु नहि होइत छैक भाइ, लोग जतय मरै चाहैत अछि वैह भेल ओकर असल जगह !

भरत—जौं सैह बात होइक त चलू अहाँ कैं पुनः दड़िभंगा मे ल' जा कए मारि दैत छी !

[एहि बात पर दुनू हँसि दैत छथि।]

सुधीर—[हँसैत-हँसैत] चलू—अही बात पर अहाँ सँ मैथिलीये मे बात करब !

भरत—हैं— एबार बोलून की बोलबेन ?

सुधीर—[आश्चर्यान्वित भए] अरे... अहाँ त आब बंगला नीके बाजै लगलहुँ !

भरत—ई सब पारस्परिक सम्मानक विषय थीक सुधीर दा' ! अहाँ हमर भाषा क आ' हमर एत्तेक आदर करैत छी, हम कियैक ने अहाँ सँ किछु सीखब ?

सुधीर—भाइ, एहन जौं सब क्यो सोचै लागय तखन त आधा दंगा-फसाद बन्दे भ' जाय ! अच्छा, ई त बताउ, किछु दिन पहिने अखबार मे अहाँ क स्कूल मे चलि रहल हड़ताल क विषय मे पढ़ने छलहुँ। की भेल तकर ? किछु समाधान भेल ?

भरत—अरे छोड़ू ओ सब ! ताहि सं चलू, चाह पीयब !

सुधीर—से त पीबे करब ! मुदा अहाँ हमर प्रश्न क उत्तर नहि देलहुँ !

भरत—अच्छा, उत्तर देब, मुदा पहिने चाह क पानी चढ़ा देमै कहैत छियन्हि ! जानकी ! जानकी ऐ !! [उत्तर नहि पाबि] अहाँ बैसू ने, ठाढ़ कियैक छी ? जानकी ?

सुधीर—कतय गेलीह ?

भरत—भरिसक आसे-पास कत्तहु गेल हैतीह ! ठहरू, हमहीं चाह क पानी चढ़ा दैत छी ! तावत् अहाँ अखबार पढ़ू !

[भरत प्रस्थित होइत छथि। सुधीर दू-एकटा मैगजिन आ' अखबार उनटाबै लागैत छथि। ओ अपनहि मने मुख्य समाचार सब पर सँ आँखि दौड़ाबै लागैत छथि।]

सुधीर—Seven died, forty injured in riots... World population will treble in 35 years...C. M. to take 10 more in cabinet, month old crisis resolved... draught toll rises to 92... धत्— सबटा पुरान बात, कोना नवीनते नहि ! [पुनः अखबार क भीड़ मे सँ एकटा उठा कए] अरे ई की ? ...Month-long school-strike ends... ई त... कहियौक। ...की थिकैक ? [देखि कए] —ई त परसू क खबरि भेल... ई...

[तावत भरत प्रविष्ट भेलाह।]

भाइ, देखू— ई त अहीं क स्कूल क विषय मे लिखलक अछि। एहि संवाद मे त कहल गेल अछि— अहाँ क स्कूल मे स्ट्राइक समाप्त भ' गेल अछि। [भरत कें निस्पृह देखि] ई अहाँ जानैत छलहुँ की ? [थम्हि कए] तकर माने अहाँ सभक आन्दोलन शेष भ' गेल अछि। त से कहलहुँ कियैक नहि ?

भरत—आन्दोलन शेष भ' गेल अछि सुधीर दा', सफल नहि भेल ! [व्यंग्यात्मक हँसी हँसैत] क्यो ई समाचार पढ़ि कए बुझियहु नहि सकैत अछि, एत्तेक दिनक आन्दोलनक समस्या एत्तेक सहजें एकहि दिनमे कोना सोझरा गेलैक ! दादा, हमरा... [कहैत-कहैत चुप भ' जाइत छथि।] नहि; की बेकार सब बात मे अहाँ क समय नष्ट क' रहल छी ?

सुधीर—[भरत क पास आबैत] नहि, आब त अहाँ कें कहैटा पड़त, की भेल अछि ? अहाँ किछु नुका रहल छी हमरा सँ...

भरत—[किछु काल चुप रहि कए] सुधीर दा'... [अश्रुपूर्ण नेत्रें] हम हारि गेलहुँ सुधीर दा', हम बेकार भ' गेल छी... ओ सब हमर नौकरी छीनि लेलक !

सुधीर—से की ? [अखबार कें उठा कए] एतय त लिखलक अछि, there was no victimization, ककरहु कोनो दंड नहि देल गेल... तखन ?

भरत—ककरहु सँ विश्वासघात नहि कैल गेल, से त नहि लिखल अछि ने ?

सुधीर – माने ? [भरत कें निरुत्तर देखि] भरत ! की भेल अछि खोलि कए बाजु ने !

भरत—जकरा सभक लेल हम सब दू-तीन गोटे आन्दोलन शुरू कैने छलहुँ, एक-आध टुकड़ी रोटी क लेल वैह सब हमरा लोकनिक पीठ मे छूरा भोंकलक !

सुधीर—अहाँ क अपनहि संगी साथी सब ?

भरत—हँ ! साथिए छलाह ओ सब। मुदा एहन साथक बड़ बेसी मोल हमरा देमै पड़ल। सब कें स्कूल क मैनेजमेंट कीनि लेलक ! पहिने बेसी पाइ पर दस्तखत करा कए कम दैत छल, आबहु से करत। मुदा हमरा जकाँ दू-तीन गोटे कें भगा कए मैनेजमेंट जे पाइ बचाओत सैह बाकी सब मे बाँटि कए दरमाहा बढ़ा देलक ! बाहर क लोग कें लागलैक, जे किछु मांग छल तकर पूर्त्ति भ' गेलैक।

सुधीर—मुदा ओ सब अहाँ लोकनिकें भगौलक कोना ?

भरत—सुधीर दा' ! जौं बस मे कहियहु लागै जे क्यो अहाँ क पाकिट सँ ढाका वा चीज-वस्तु लेबाक चेष्टा क' रहल अछि त अहाँ की करबैक ?

सुधीर—कम सँ कम ओकरा दू चाट मारि कए भगा देबैक !

भरत—बाकी लोग कोना बूझतजे ओ सत्ये चोर छलैक ?

सुधीर—कियैक ? हम कहबैक जे ओ चोरी करबाक चेष्टा कैने छल। मुदा ई सब कियैक पूछि रहल छी ?

भरत—कारण, ठीक सैह भेल हमरा सभक साथ। मैनेजमेंटक शिकायत

छलन्हि, हम सब स्कूल क लैब सँ चीज-वस्तु हँटौलहुँ, और कत्तेको टाकाक सामान क क्षति कैलहुँ... आदि आदि ! [थम्हि कए] अहीं कहू दादा—टंग टुट्टा घोड़ा क टांग कोना तोड़ू ? ओ कोनो लैब छल ? ओ त प्रत्येक मास छात्र सब सँ ठगि कए लैब फीस लेबाक साधन मात्र छल !

सुधीर—मुदा अहाँ क संगी-साथी लोकनि कोना ई सब मानि लेलथिन्ह ?

भरत—कहलहुँ त .. हमरा सभक रोटी हुनका सब मे बाँटि देल गेलन्हि, हुनका सभक गला बझि गेलन्हि ताहि सँ, प्रतिवाद कोना करतिहथि ? सुधीर दा', मैनेजमेंट खून पी जायत अहाँ क, मुदा शरीर पर दाँत क चेन्हो नहि छोड़त कत्तहु ! हमर संगी-साथी सब सोचलन्हि जे जतबे भेंटैत अछि ल' ली ! बाद मे ईहो भेंटत तकर निश्चये की ? बस, आन्दोलन शेष !

सुधीर—बुझलहुँ ।

भरत—मुदा हे, अहाँ क सपथ जानकी क कान धरि ई सब नहि पहुँचै ! ओ किछु नहि जानैत छथि । बेचारी ! सोचि रहल छथि जे बेसी किछु हैत त हमरा मात्र पछिलुका दुइये मास क टाका भेंटत ! हमरा जे आब कोनो मास क टाका नहि भेंटत, से हम हुनका कोना कहियन्हु ? [जानकी क कंठ स्वर सुनल जाइछ ओ नेपथ्य मे ककरहु सँ बात करैत छथि ।] वैह, जानकी आबि गेल छथि भरिसक !

जानकी—[प्रविष्ट भए केबाड़ बन्द करैत] अरे, दादा ? अहाँ कखन ऐलहुँ ?

सुधीर—इयैह, कनिये देर भेल अछि ! मुदा कतय चलि गेल छलहुँ बहीन ?

जानकी—हम ? इयैह कनेक बगल बला फ्लैट मे गपसप करै... [किछु सूँघैत, भरत सँ] चाह क पानि चढ़ा कए छोड़ि देने छियैक की ?

भरत—ओहो ! हम त बिसरिये गेल छलहुँ ! [उठबाक प्रयास करैत छथि ।]

जानकी—अहाँ बैसू ने ! हम देखैत छी । [प्रस्थित होइत छथि ।]

सुधीर—जानकी बहिन कनेको नहि बदलल छथि । पहिनुके जकाँ चंचल, तेहने स्वभाव ! बेचारी जानितहु नहि छथि जे अहाँ एखन बेकार छी...

भरत—स् स्-स्-स् ! [चुप रहबाक इङ्गित करैत] ई बात नहि बाजू एखन !

[केवाड़ पर कराघात क शब्द होइत अछि ।]

नन्दी—[नेपथ्य सँ] भरत बाबू छी औ ? भरत बाबू!

भरत—इयैह ऐलहुँ! [दरबाजा खोलि कए] अरे, नन्दी बाबू! की समाचार?

नन्दी—समाचार त नीके! दौगैत-दौगैत थाकि गेलहुँ। देखियौक ने— ई सबटा सामान स्टेशन सँ एतय मँगबौलहुँ। अही मे की कम...? [जोर सँ] कतय गेलें रौ ? हे रै! [एतबहि मे दू-तीनटा मजदूर किछु बक्सा ओछाओन आदि ल' कए आबैत अछि।] हे-हे... ओत्तय धरहीं! ओत्तहि.. हँ... [सामान सबटा रखैबाक पश्चात्] जो! बाकी सामानो ठेला पर सँ ल' आन! जल्दी कर! और बहुत रास काज करबाक छौक! [मजदूर सब प्रस्थित होइत अछि। सुधीर कें देखा कए—] हिनका नहि चिन्हलियन्हि, भाइ ?

भरत—ई छथि सुधीर दा', सुधीर राय! जनम सँ बंगाली, करम सँ मैथिल!

सुधीर—नहि, नहि; भरम सँ बंगाली, मरम सँ मैथिल! [हँसि दैत छथि।]

नन्दी—[हँसैत] नमस्कार! हमर नाम भेल नन्दी झा! एतय एकटा प्राइवेट फर्म मे काज करैत छी पेट पालै लेल। आ' बाकी समय मैथिली सेवा करैत छी...

सुधीर—छाती पाळै लेल! [दुनू गोटे हँसि दैत छथि। सुधीर गम्भीर रहैत छथि।]

नन्दी—मुदा, भरत बाबू कें बड चुपचाप देखैत छियन्हि! की बात थाक ?

भरत—[हँसबाक चेष्टा करैत] न्-नहि!... कतय... हम त .. अच्छा, एक मिनट... और एक कप चाह दय कहि दियन्हि हुनका... अहाँ सब तावत् गपसप करू! [वेगें निष्क्रान्त होइत छथि।]

नन्दी—भरत बाबू बदललाह नहि! सदिखन चिन्तिते रहैत छथि, एखनहु! भरिसक... सदिखन कोनो कविते दय सोचैत रहैत छथि!

सुधीर—हूँ... एहन कविता जे जिनगी सँ परिहास करैत होइक!

नन्दी—माने ?

सुधीर—किछु नहि !

भरत—[तीन कप चाह नेने प्रविष्ट होइत अछि।] लेल जाय ! [दुनू कें चाह द' कए ट्रे कें एक कोना में राखि अपनहु एक कप नेने बैसैत छथि। सब क्यो चाह पीबैत छथि। एक मुहूर्त्तक लेल सब चुप भ' जाइत छथि।]

सुधीर—[नन्दी सँ] एकटा बात नहि बुझलहुँ ! ई सामान सबटा...?

नन्दी—ओ ई ! हम सब जे संघ क फंशान क' रहल छी, ताहि लेल बाहर क जे अतिथि लोकनि आयल छथि, हुनका सब मे सँ चारि गोटे एतय रहताह, तें...

सुधीर—चारि गोटे...? ई सब अपनहि त दू गोटे छथि ? घर त छन्हि एकहिटा, तखन...?

भरत—से अहाँ चिन्ता जुनि करू दादा ! हम सबटा ठीक क' लेब !

सुधीर—की ठीक क' लेब ? कोना करब ? ई घरे थीक ! कोनो इलास्टिक त नहि जे नमरा लेब !

भरत—[कृत्रिम रूपें हँसैत] नहि सुधीर दा' ! अहाँ बड़ हँसी करैत छी ! [नन्दी सँ] नन्दी बाबू ! अहाँ निश्चिन्त रहू ! रुब व्यवस्था भ' जायत। अहाँ सब हुनका लोकनि कें ल' कए आबि जाउ !

नन्दी—त ठीक अछि ! [कप टेबुल पर धरैत] एखन हम चलैत छी। फेर त साँझखन भेंट हैबे करत ! अच्छा, सुधीर बाबू ! [नन्दी नमस्कार करैत छथि। सुधीरो प्रति नमस्कार करैत छथि। तत्पश्चात् नन्दी प्रस्थित होइत छथि।]

भरत—[नन्दी क चलि गेलाक पश्चात् सुधीर किछु कहै चाहैत छथि। भरत हुनका बाधा द' कए कहैत छथि] नहि, सुधीर दा' ! अहाँ किछु नहि कहियौक ! ई सब हमरा करैयेटा पड़त !

सुधीर—हम अवश्य कहब ; ई अहाँ की शुरू कैलहुँ ? भाषा-प्रेम ठीक अछि। मुदा अहाँ जे किछ क' रहल छी से त्याग नहि, अपनहि पर अत्याचार करब थीक। भरत ! एखन जकरा पास बेसी रहैत छैक, त्याग क महिमा

सैह देखा सकैत अछि।

भरत—मुदा, ई त हमरा करैयेटा पड़त। हम गछि लेलहुँ...

सुधीर—ठीक अछि, त चलू हमहूँ त देखी कत्तेक की अछि अहाँ क भंडार मे—

भरत—[सुधीर कें भनसा घर दिसि बढ़ैत देखि—] नहि सुधीर दा'!

सुधीर—[पाछाँ घुरि कए उत्तेजित स्वरें] ई कियैक नहि कहैत छी जे किछु नहि अछि सुधीर दा'! [पुनः कुर्सी पर बैसैत] ई आत्महत्या थीक भरत! [माथ पर हाथ धरैत] सैहटा नहि; ई सोचलहुँ जे दू दिन बाद जानकी की खैतीह? अहाँ क भावी सन्तान की खाओत? अहाँ अपना कें मारि सकैत छी। मुदा हुनका सभक मुँह क कर कियैक छीनि रहल छियन्हि?

भरत—आस्ते बाजू! जानकी सुनि लेत त...

सुधीर—[एतबा मे जानकी भनसा घर सँ आबैत छथि। जानकी कें देखैत] की करैत छलहुँ?

भरत—इयैह तर-तरकारी काटै मे लागल छलीह! [जानकी बिनु किछु कहनहि बाजार क थैला हाथ मे लए दरबाजा द' कए बहिराबै लेल आगाँ बढ़ैत छथि।]

सुधीर—तर-तरकारी? भरत! आइ कालिह अहाँ सभक भनसा घर मे तरो-तरकारी फरैत अछि की?

भरत—आह! सुधीर दा'! प्लीज!

सुधीर—भाषा क लेल त्याग करैत-करैत अहाँ अपने त सत्यभाषणोक त्याग कैये देलहुँ, जानकियो बहिन कें सैह सिखा देलियन्हि!

जानकी—से कियैक?

सुधीर—एम्हर त आउ! [जानकी सुधीर क पास आबैत छथि। सुधीर हुनक दुनू हाथ क दिसि देखैत छथि। जानकी साड़ी क अढ़ मे हाथ झाँपबाक प्रयास करैत छथि।] कनेक देर पहिने जखन पुछलहुँ कतय गेल छलहुँ त अहाँ कहलहुँ बगले मे गपसप करै गेल छलहुँ!

जानकी—[घबड़ा कए] हँ; से त गेले छलहुँ।

सुधीर—[व्यंग्यात्मक स्वर मे] आ' गपेसप करैत-करैत सोना क चूड़ी बेचि कए पाइ ल' आनलहुँ नहि ?

जानकी—न-नहि दादा ! आइ काल्हि त चोरी और छीना-झपटी बहुत बढ़ि गेल अछि ने; तैं ओ खोलि कए बक्सा मे ध' देने छियैक !

भरत—हँ-हँ, खोलि कए राखि देने हैतीह !

सुधीर—त ठीक अछि। एतय त क्यो चोराबैबला नहि अछि। कनेक पहिरि कए देखाउ त !

जानकी—पहिरि कए...? माने... हम...

सुधीर—[डाँटैत] हम... माने... की ? पहिरि कए देखाउ ने !

जानकी—[धीरे-धीरे बक्सा क पास जा कए पेटी खोलि किछु खोजबाक अभिनय करैत छथि। तकर बाद बिछौना क तर मे एवं घर क आन सब ठाम खोजैत छथि।] कतय ने राखने छी, से मोन नहि पड़ि रहल अछि।

सुधीर—[पाछाँ घुरैत] अच्छा, त हम मोड़ क गहना क दुकान मे जा' कए पूछैत छी जे कतय राखल गेल अछि ओ चूड़ी !

जानकी—[आगाँ बढ़ि कए] नहि !

सुधीर—तकर माने ओत्तहि अछि ! [जानकी निरुत्तर रहैत छथि।] देखैत छियैक भरत ! अहाँ क भाषा क लेल त्याग क कारणें अहाँक पत्नी कें की-की करै पड़ि रहल छन्हि ?

भरत—[दुःखित भ' कए] ई... ई अहाँ की कैलहुँ जानकी ? नहि, ई ठीक नहि कैलहुँ !

सुधीर—वाह रे भाषा-प्रेम ! पति कें ई पता नहि जे पत्नी अपन अन्तिम गहनो बेचि चुकल छथि। और बेचारी पत्नी कें पते नहि जे पति क नौकरिए छिना गेल छन्हि !

जानकी—[चौंकैत] दादा ! ई... ई की सत्य थीक ? नहि-नहि, ई भ' नहि सकैत अछि ! ई कोना...? [भरत कें चुप देखि] अहाँ किछु कहि

कियैक नहि रहल छी ? किछु त कहू ! [भरत तैयहु चुप रहैत छथि ।]

भरत—[धीरे-धीरे माथ उठा कए] अहाँ कियैक ओ चूड़ी बेचि लेलहुँ जानकी ? ओ अहाँ के कत्तेक प्रिय छल !

जानकी—से नहि करितहुँ त आइ कोना...?

भरत—हम त सुधीर दा' सँ टाका क लेल कहैते छलियन्हि !

सुधीर—[आँखि मे नोर आबि जाइत छन्हि—] सुधीर दा' सँ ? सुधीर कियैक पाइ देत। हम नहि देब, हम एकहु पाइ नहि देब। अहाँ दुनू आत्महत्या करब, हम ताहि लेल कियैक पाइ देब ? [कहैत-कहैत आत्म-संवरण क' नहि पबैत छथि एवं झपटि कए प्रस्थित होइत छथि। जानकी कानै लागैत छथि। भरत हुनक पास जा' कए हुनका सान्त्वना दैत छथि। जानकी भरत क छाती पर माथा राखि कए और जोर सँ कानै लागैत छथि। मंच अन्धकार भ' जाइत अछि। किछुए काल मे मंच क दहिना दिसि अस्पष्ट आलोक मे चारि गोट व्यक्ति दर्शक लोकनि सँ पाछाँ मुँह कैनै बैसल देखल जैताह। ओ सब तास खेलैत-खेलैत बात करैत रहैत छथि। मुदा सम्पूर्ण वार्त्तालाप नेपथ्य सँ भासल आबैत अछि।]

प्रथम—हे, देखैत छलहुँ ने आइ; ओ पटनियाँ छौड़ा कोना कूदि रहल छल ?

द्वितीय—बैरिस्टरी पास क' लेलक त बूझैत अछि जे एहि धरती पर हमरा सँ क्यो बुधियारे नहि अछि... अरे, कत्तेक देखलियौक तोरा सन-सन बैरिस्टर...

तृतीय—कहैत छलैक, सब वेरि ऊँच जातियेक लोग कियैक मैथिल महासभा क सभापति होइत अछि ? मर, त तोहूँ त छें ब्राम्हणे ? तखन तोरा कियैक कष्ट होइत छौक ?

चतुर्थ—बुझलहुँ नहि ? ई सब एकटा चालि थिकैक ! ओ ई सब कहि कए एतहुका नवतुरिया लोकनि कें भड़का रहल छल ! की ? —त जातिवाद भगाउ ! अरे, स्वयं ब्रम्हा जखन हुनका सब कें श्रेष्ठ बना गेल छथि तखन हुनक विधान कें के टारि सकैत अछि ?

प्रथम—ओना एकटा बात हम अवश्य कहब— एना बेसी दिन चलैत रहत त महासभा टूटि जायत ! कम सँ कम लोगो कें देखाबै लेल त एक आध बेर कोनो दोसरो जाति क लोग कें अध्यक्ष बनाबहि पड़त !

द्वितीय—ई अहाँ की कहलहुँ ? बाबू अमरनाथ 'निर्लोभ' क रहैत कोना अहाँ आन ककरहु अध्यक्ष बनैबाक लेल सोचियो सकैत छी ?

तृतीय—हँ; दोसर जाति मे क्यो किछु बनि कए देखाबौक त एकटा बातो !

द्वितीय—[प्रथम सँ] तकर बाद अहाँ कहब दोसरो दोसर धर्म क लोग कियैक ने अध्यक्ष बनत महासभा क ?

प्रथम—से अहाँ जे कहू ! हमर त सब दिन सँ विचार इयैह अछि जे एहि बेरि कोनो मुसलमान वा ईसाइये कें अध्यक्ष बनाओल जाइक !

द्वितीय—हे ! जहिया ई सब कांड करब तहिया कम-सँ-कम हम त नहि रहब सभा-सोसाइटी मे...!

प्रथम—से कियैक ?

द्वितीय—हे ! हम साफ बात कहैबला लोग छी ! हम त सब लोग क साथ एक आसन पर बैसियहु नहि सकैत छियैक ! ताहि पर एहन सब कें बनायब अध्यक्ष ? कथमपि नहि !

चतुर्थ—मुदा, एकटा बात ई ठीके कहैत छथि । अहिना त आन भाषाभाषी आ' सरकार कहिते अछि जे मैथिली-वैथिली किछु नहि थीक— ई सबटा दरभंगिया ब्राम्हण सभक चालि थिकन्हि ! बेकार हल्ला क' रहल छथि ओ सब ! ताहि लेल कम-सँ-कम नीतियोक दृष्टि सँ ई आवश्यक अछि जे हम सब कहियहु-कखनहु दोसरो दोसर लोग कें अध्यक्ष बनाबी !

प्रथम—ठीक ! हम त एतबहि कहैत छलहुँ जे बनौक ने क्यो छोटे जाति मे सं अध्यक्ष ! नेतृत्व त हमरहि सभक हाथ मे रहत । अध्यक्ष क्यो रहय, नेता त 'निर्लोभ' जी रहताह !

तृतीत—से कोना ?

चतुर्थ—कियैक ? एहन एक गोटा कें अध्यक्ष बना दियौक जकरा नामो नहि

सही करै आबैक, बाजै नहि आबैक नीक जकाँ... बस्! और की चाही ? तकरा त हम सब उठै कह्बैक त उठत, बैसै कह्बैक त बैसत !

तृतीय—ई मुदा बेजाय नहि कहलहुँ !

द्वितीय—से अहाँ सब जे कहू— हमरा ई बात पचि नहि रहल अछि !

प्रथम—भाइ, युग बदलि रहल अछि। किन्तु त अहाँ कें पचाबहि पड़त। पहिने विशुद्ध घी खाइत छलहुँ। आब त वनस्पति घी खैबाक आदति बना लेलहुँ कि नहि ? तहिना ईहो...

चतुर्थ—आ' ई सब पद त अहिना देखाबैक लेल होइत छैक ! आब ओ दिन दूर नहि छैक जखन हमरा सभक मांग क पूर्त्ति हैत आ' धीरे-धीरे सब सरकारी संस्था मे हमरा सभक भाषा कें स्थान भेंटत ! कतेको संस्थान बनत सरकारी पाइ सँ ! से सब दय सोचू जे के कतय बैसब, कोन गद्दी पर ! बनै दियौक जकरा मोन होइक महासभा क अध्यक्ष !

तृतीय—हूँ... ई त अहाँ विलक्षण बात कहलहुँ ! आब कहू यौ ! की कहैत छी ?

द्वितीय—स्-से... बात त नीके कहलहुँ, तखन...

तृतीय—आइ कालिह लोग कें ऊँच पदक लेल कत्तेक कठिन तपस्या करै पड़ैत छै, जानितहि छियैक ! ओकरा सभक साथ उठबा-बैसबाक मन नहियें करै त अपन-अपन घर जा' कए कनेक गंगा जल छींटि लेब, और की ?

[एहि बात पर सब क्यो हँसि दैत छथि। हुनका सब पर सँ प्रकाश हँटि कए मंच क बाम दिसि कनिके टा जगह पर पड़ैत अछि। भरत अर्ध शयित देखना जाइत छथि। जानकी बैसल रहैत छथि।]

जानकी—सुनैत छियन्हि हिनका सभक बातचीत ?

भरत—अहाँ कथी लेल ई सब सुनि रहल छी ? कनेक पटा रहू ने ! ई सब त होइते रहैत छैक !

जानकी—होइते रहैत छैक ? कियैक ? इयैह छन्हि हिनका सभक मैथिली प्रीति ?

भरत—स्-स्-स्-स्! आस्ते ! सुनि लेताह ओ सब !

जानकी—[किछु काल चुप रहि कए] हमरा सभक भाषा-आन्दोलन कें की

एहन सब लोग सँ मुक्ति नहि भेंटि सकैत छैक ?

भरत—की कहैत छी जानकी ? इयैह सब त नेता छथि एहि आन्दोलन क !

जानकी—आइ अहाँ सँ त दोसरे बात सुनि रहल छी ! अहीं त कहैत छलियैक जे शरीर क जे अङ्ग सड़ि गेल हो तकरा काटि कए बाद द' देबाक चाहियैक ! तखन ? [थम्हैत] तखन हिनका सभक विरुद्ध क्यो किछु कहैत-करैत कियैक नहि अछि ? अहीं हिनका सभक सभा मे ठाढ़ भ' कए कियैक नहि किछु कहैत छियन्हि ?

भरत—[दीर्घ श्वास त्यागि, उठि कए बैसैत छथि ।] हम ? हम त हारल लोग मे सँ छी, जानकी ! जकरा खैबा पीबाक उपाय धरि नहि छैक, ओकर के सुनतैक ?

जानकी—[थम्हैत] सत्ये ! अहाँ कत्तेक बदलि गेल छी ! पहिलुका दिनक अहाँ, अहाँ क धधकैत कविता आ' आजु क अहाँ...

भरत—हम कोना किछु कहू जानकी ? पिछुए मास मे ओ सभ महासभा क काजक लेल एकटा काजक लोग क नियुक्ति करैबला छथि । हम किछु कहितहुँ त 'निर्लोभ' जी गोसा जैतथि ! [थम्हैत] अहाँ त जानितहि छी आजुक दिन मे नौकरी एक बेरि गेला पर दोसर काज भेंटब कत्तेक कठिन होइत छैक !

जानकी—[किछु काल चुप रहैत छथि ।] अहाँ क ओ स्वर एखनहु हमर सपना क प्रधान पात्र बनि दिन राति घुरैत रहैत अछि—

'क्यो अछि जे एहि पृथ्वी क प्रत्येक तरु-तर
बारूद उभलि देमै चाहैत अछि;
क्यो प्रयास क' रहल अछि
पृथ्वी क इतिहास कें कनेक मोड़ि देबाक
क्यो अछि जे पृथ्वी क सब मनुष्य कें डरा कए
बर्फ बना देत...' *

---

* मूल बंगला काव्यांश–अमिताभ गुप्त (१९७७) 'एसो आमार घरे' (गांगेय पत्र प्रकाशन)

[दुनू किछु काल चुप रहैत छथि।]

भरत—तखन हम जीवित छलहुँ, जानकी !

जानकी—आ' एखन ?

भरत—एखन हमर गिनती लहासे मे होइत अछि। हम एखन मृत छी, बेकार, आ' निष्क्रिय।

जानकी—[किछु काल चुप रहि कए] अहाँ कहने छलहुँ जे एम्हर किछु दिन पूर्व बहुत दिन पर एकटा कविता लिखलहुँ अछि। से हमरा सुनैलहुँ त नहि।

भरत—की सुनब ?

जानकी—सैयहु ! [थम्हैत] सुनाउ ने !

भरत—[किछु काल चुप रहि कए—] पछिलुका एक-दू वर्ष मे इयैह एकटा कविता हम लिखने छी। [किछु काल चुप रहि कए कविता-पाठ करैत छथि। कविता-पाठ आरम्भ हैबाक संगहि संग धीरे-धीरे आलोक मिझा जाइत छैक।]

आइ कालिह हमर शब्द
त्यागि देलक आपन देह,
वर्ण क मूर्धा कतहु हेरा गेल अछि;
अर्थ बदलि लेलक आपन भेष !
आइ कालिह 'हाथ' कहने हम 'माथ' बूझैत छियैक,
'तरुआरि' कहने ' मूल्य वृद्धि';
'मनुष्य' क अर्थ भ' गेल अछि 'जन्तु',
'वेद' क अर्थ 'विलाप', 'मंत्र' 'क्रन्दन',
'प्रेमिका' 'बिकाऊ वस्तु' कें कहैछ,
'मन्दिर' मणिकर्णिकाक 'श्मशान' सुनसान
'आवास' 'गर्भ' कहाइत अछि,
'गर्भ' पतित 'पथ' !

आइ कालिह हमर वाक्य सभ सँ
क्रिया झहड़ि जाइत छथि,
अव्यय भ' जाइत छथि अमितव्ययी ;
विशेषण दोसर दुनिया क लोग जकाँ
देखियहु कए नहि देखैत छथि !
आइ कालिह हम छी एसगर
एकटा विशेष्य, उद्देश्य-विधेयहीन !
रहबाक लेल हमरा लग केवल उपसर्ग अछि—
रोगाक्रान्त, और गर्भ मे अछि सर्वनाम—
विकलांग।

आइ कालिह, हमरा घ वा ङ पूछैत छथि कि
'भरत ! अहाँ किनकहु सँ प्रेम करैत छलियन्हि' ?
त हम कहैत छियन्हि—
'सदर्थक। हमर गर्भ मे प्रेमिका क पथ-पात।
तरुआरि सँ हाथ। हमर विकरण।
शिशुक लहास मन्दिर क मूर्त्ति।
प्रत्यह प्रार्थना।
पशु क मंत्रपाठ, वेदोच्चारण।
मनुष्य क नर मांस लोभ, मन्दिर क विनष्टि।
प्रेम शिशु क निहनन।'

ओ कहैत छथि,
बूझैत नहि छी अहाँ क भाषा, अहाँ क कथ्य,
की कहै चाहैत छी अहाँ ?
हम कहैत छियन्हि,

नहि बूझब हमर बात, कारण
एकर बोध हैत सर्वस्व हेरैनहि सँ।
हम कहैत छियन्हि,
नहि बूझब हमर शब्द, कारण
अहाँ शोषक छी
आ' हम शोषित।
बाजि नहि सकब हमर भाषा मे, कारण
अहाँ क मुँह मे रक्त लागल अछि।

[कविता-पाठ क बाद मंच जखन पुनः आलोकित होइत अछि, तखन नन्दी आ' नारद भरत क घर मे बैसल देखल जाइत छथि। भरत मलिन वस्त्र आ' रुग्ण शरीर लए एक कोना मे ठाढ़ रहैत छथि। घर मे एकटा चौकी कें छोड़ि आर किछु नहि छन्हि।]

नारद—[भरत सँ] अहूँ बैसि ने जाउ ! [ई कहैत छथि, मुदा चौकी पर भरतो क लेल जगह बना देबाक विशेष कोनो प्रयास नहि करैत छथि।]

भरत—नहि, ठीक छी ! [थम्हैत] 'निर्लोभ' जी कखन ऐताह ?

नारद—[एकटा पान नन्दी कें दए दोसर आपन मुँह मे धरैत छथि। नन्दियो कनेक इतस्ततः क' कए पान मुँह मे धरैत छथि।] इयैह आबिये रहल हैताह ! जानितहि छी, कै मास पूर्व फंशन क लेल हुनका कत्तेक श्रम करै पड़लन्हि। ताहि पर एम्हर दिल्ली मे जा कए लोकसभा क सामने आन्दोलन क प्रदर्शन सेहो कैलन्हि ! कत्तेक जगह सभो कैलन्हि। तैं...

भरत—[अनुच्च स्वर मे] आन्दोलन क प्रदर्शन !

नन्दी—ओना ई कहू नारद भाइ, आइ ओ हमरे सब कें एखन कियैक बजौलन्हि ? आइ त साधारण सभा हैबाक बात छलैक।

नारद—अरे साधारण सभा त साधारणे होइत छैक। तकर पहिने ई असाधारण सभा बजौने छथि।

नन्दी—माने ?

नारद—माने बुझबा मे देर लागत। एखन त संघ मे दुइये वर्ष भेल कि नहि!

नन्दी—ताहि सँ की ? पहिने जतय रहैत छलहुँ ततहुँ त मैथिली क संघ-सोसाइटी मे छलहुँ ?

नारद—मुदा, ओतय 'निर्लोभ' जी सन नेता क संग मे त नहि रहलहुँ! तेँ हिनक काज करबाक पद्धति सँ परिचित नहि छी!

भरत—[निस्पृह स्वरेँ] नारद भाइ!

नारद—हूँ; कहू!

भरत - हम अहाँ सँ जे बात कहने छहहुँ से...

नारद—हूँ हूँ; सैह सब विषय पर त आलोचना हैत!

नन्दी—कोन सब बात ?

नारद—महासभा क काम एत्तेक ने बढ़ि गेल अछि जे सबटा काज क देखरेख करबाक लेल एकटा स्थायी कर्मचारी चाही हमरा सब केँ। निर्लोभ जी कहैत छलथिन्ह जे संस्था क पास पाइ जखन अछिये, तखन कियैक ने एक गोटा केँ राखल जाय ?

नन्दी—ई बड़ नीक विचार अछि!

भरत—अहाँ सब त जानितहि छी हमर हाल! खैबा-पीबाक व्यवस्थे नहि रहल; ताहि पर जानकी बच्चा केँ जन्म देबा सँ पहिनहि एत्तेक अस्वस्थ भ' गेलीह। अगल-बगल क लोग दयावश परसू हुनका अस्पताल मे नहि भर्त्ती क' दितथि त नहि जानि... [कहैत-कहैत आत्मसंवरण क' लैत छथि।] तेँ हमरा जौं ई काज भेंटि जाय त...

नारद—अहाँ एत्तेक चिन्ता कियैक क' रहल छी ? 'निर्लोभ' जी केँ आबै दियन्हु ने! अहाँ तावत् कनेक चाह-जलपान क व्यवस्था करियौक! जानितहि छी, 'निर्लोभ' जी भोजन-प्रिय छथि!

भरत—मुदा घर मे त... अच्छा, हम देखैत छी! [ई कहैत भनसा घर सँ एकटा केतली नेने प्रस्थान करैत छथि।]

नन्दी—बेचारे भरत बाबू कें ई नौकरी भेंटि गेने बड़ नीक हैत !

नारद—मुदा दुःख क बात ई जे से हिनका भेंटतन्हि नहि।

नन्दी—कियैक ?

नारद—अहूँ बड़ सोभ्फ लोग छी नन्दी भाइ ! जे एहि काज क लेल योग्य छथि तनिकहि भेंटतन्हि।

नन्दी—के छथि ओ योग्य लोग ?

नारद—रामशरण बाबू !

नन्दी—हुनका मे विशेष योग्यता की छन्हि ?

नारद—सब सँ प्रधान योग्यता भेलन्हि ई जे ओ 'निर्लोभ' जी क भागिन क सार क गौंआ छथि।

नन्दी—ई कोन बात भेल ? ई त सरासरि अन्याय थीक ! हम अवश्य एकर विरोध करब।

नारद—[हँसैत] अच्छा, ई त बताउ ! अहाँ रिटायर्ड कहिया धरि भ' जायब ?

नन्दी—[अकचका कए] कियैक ? एक साल मे !

नारद—आ' अहाँ कें कै गोट कन्या क विवाहक व्यवस्था करबा क अछि ?

नन्दी—तीन गोटेक... मुदा ताहि सँ...

नारद—[बाधा द' कए] और अहाँ क बालक शर्टहैंड-टाइपिंग सोखियहु कए आइ पाँच वर्ष सँ बेकार बैसल छथि, सेहो ठीक... नहि ?

नन्दी—हूँ !

नारद—अहाँ जानैत छी जे 'निर्लोभ' जी जौं एक बेरि कहि देताह त अगरवाल साहब आपन आफिस मे रखबा सकैत छथि ?

नन्दी—[माथ भ्फुकौने] हूँ।

नारद—तखन अहूँ वैह लोग कें योग्य कहबन्हि जनिका 'निर्लोभ' जी योग्य मानैत छथि। [नन्दी चुप भ' कए बैसल रहैत छथि।] जनिका दय हम कहैत छलहुँ ओ बेचारे कोनो तरहें मैट्रिके टा पास कैलन्हि। आब अहीं कहू— ओ मैथिली क काज करब छोड़ि आन कोन काज क' सकैत

छथि ? और के हुनका काज देतन्हि ? ने टाइपिंग जानैत छथि आ' ने दू अच्छर शुद्ध अंग्रेजिए लिखि सकैत छथि। आ' हरो नहि जोति सकैत छथि, कारण मैट्रिक जे पास कैलन्हि !

नन्दी—[दबल स्वरें] मुदा भरत बाबू त एम० ए० पास छथि। आ' मैथिलीक सेवा त ओ कम नहि कैलन्हि !

नारद—सेवा त कयो कम नहि कैलक नन्दी भाइ ! 'निर्लोभ' जीओ कम नहि कैलन्हि, तैं ओ कहैत छथि त हुनक भागिन क सार क गौंआ कें काज भेंटबाक चाहियन्हि। अहाँ कम नहि कैलहुँ, तैं अहाँ क बालक अगरवाल साहब क आफिस मे नौकरी करताह। रहल भरत बाबू क बात ! त हुनका लेल हम सब की कोनो कम कैलियन्हि ? अहीं कहू ! संस्था क दिसि सँ पाँच वर्ष पहिनहि हुनकर कविता सभक एकटा संग्रह छापि देल गेल छन्हि। कविते कवि क जिनगी होइत छैक। हुनक कविता छापि कए हम सब हुनका आपन जिनगी द' देलियन्हि ! और की चाहियन्हि हुनका ?

नन्दी—कविता जिनगी अछि, मुदा जिनगी मे कविते टा नहि होइछ, लोग कें भूखो-प्यास लागैत छैक। बेचारे भरत बाबू कें त एखन खैबाक उपायो नहि छन्हि !

नारद—तैं हम सब हुनका खुआ नहि देबन्हि। हुनका कवि रूप मे जे सम्मान कैलियन्हि सैह की कम भेलन्हि ? आ' अहाँ जे कहब हुनका पास किछु संचये नहि छन्हि से कोना विश्वास करब ? सैह होइत त ई डेढ़-दू मास हुनका कोना चललन्हि, एखन जे पत्नी बीमार भ' कए अस्पताल मे छथि तकर खर्चा कोना चला रहल छथि ? तैं ओ सब बात छोड़ू। [निर्लोभ जी कें प्रविष्ट होइत देखि] प्रणाम सरकार— आओल जाय।

निर्लोभ—प्रणाम। [नन्दी जी क दिसि देखैत] की नन्दी जी ? कहू, अहाँ क की हाल-समाचार।

नन्दी—जी, सब ठीके अछि।

निर्लोभ—[बैसैत-बैसैत] अहाँ क एक बालक क विषय मे नारद जी कहैत

रहथि। त ओकरा कोनो नौकरी-तौकरी भेंटलैक वा नहि ?

नन्दी—जी नहि— हम त अपने क भरोसें...। [चुप भ' जाइत छथि।]

निर्लोभ—[बैसि कए] बेस-बेस। बैसैत ने जाउ। [नन्दी-नारद दुनू गोटे बैसि जाइत छथि।] एम्हर संवाद सुनलियैक ?

नारद—कोन संवाद ?

निर्लोभ—संसद मे मैथिली क प्रश्न आइ भरिसक उठत !

नन्दी—सत्ये ?

नारद—क्यो कहैत छलाह जे इयैह दू-एक दिन मे ई प्रश्न उठत। मुदा एत्तेक शीघ्र से हैत तकर आशा नहि छल !

निर्लोभ—उठत नहि कोना ? हम सब पार्लियामेंट क सामने एत्तेक विक्षोभ-प्रदर्शन कैलहुँ, एत्तेक पत्र-अभियान चलैलहुँ, पुस्तक-प्रदर्शनी कैलहुँ, सरकारी और विरोधी नेता सब सँ भेंट-घाँट कैलहुँ, कत्तेको जुलूस निकलबौलहुँ— तखन ईहो नहि हैत ?

नारद—अहाँ नहि रहितहुँ त एतबाक होइत थोड़बे ?

निर्लोभ—नहि-नहि ; अहाँ त बढ़ा कए कहैत छी। हम एसगरे नहि, विभिन्न संस्था क दिसि सँ आरो नेता सब रहथि !

नारद—सरकार ! एक जगह नेता सब जखन बेसी भ' जाइत छथि, तखन नेतो सभ कें नेता क प्रयोजन होइत छन्हि ! अहाँ नहि रहितहुँ त एत्तेक सब काज एक साथ होइत थोड़बे ? आ' से नहि होइत त सरकार एकर उपेक्षे करितथि।

निर्लोभ—एखुनका समाचार मे देखू, की कहैत अछि। सरकार की जवाब दैत छथि ताहि पर हमरा सभक हार-जीत क पता लागत !

नारद—[एतबहि मे भरत कें एक हाथ मे किछु जिलेबी आ' दोसर हाथ मे चाह सँ भरल पात्र नेने प्रविष्ट होइत देखि] इयैह, भरत बाबू चाय ल' कए आबियो गेलाह। ओहि ठोङा मे की नुकौने छी भरत बाबू ? [भरत ततबा मे लग पहुँच गेलाह।]

नन्दी—[भरत जिलेबी नारद क सामने रखला उत्तर] जिलेबी अछि।
[नारद क दिसि बढ़ा दैत छथि।]

नारद—लेल जाय। [निर्लोभ कें दैत छथि। तावत् भरत घर क कोना सँ किछु कप आनि कए ताहि मे चाह ढार' लागैत छथि। तकर बाद सब कें कप देमै लागैत छथि।]

निर्लोभ– [चाह पीबैत पीबैत] एक टूटा काज क बात भ' जाय!

नन्दी – हूँ!

निर्लोभ—अपना सभक संघ क नवका कार्यकारिणी तैयार करबाक समय आबि गेल अछि। एहि बेरि हम सब आन सब बेरि सँ पछुआयले छी।

नन्दी – त एहि मे की अछि? एकटा दिन स्थिर क' कए साधारण सदस्य सभक भोट सँ निर्वाचन भ' जाइक।

नारद—निर्वाचन? [उच्च स्वरें हँस' लागैत छथि। निर्लोभ मृदु-मृदु हँसैत छथि।] नन्दी जी, अहाँ सत्ये बड़ काँच छी एहि सब विषय मे [

नन्दी—से कियैक?

नारद—संघ मे जे शान्ति अछि सबटा नष्ट भ' जायत।

नन्दी—से कियैक?

निर्लोभ—कारण, एहि संघ मे जत्तेक ने सदस्य अछि, तकर दुगुन्ना गुट्ट अछि। एक दोसरा कें देख' नहि चाहैत अछि। निर्वाचन सँ प्रत्येक गुट सँ एकहु गोटें जौं कार्यकारिणी मे आबि जाथि त प्रतिदिन आपसे मे मारि करै लागताह।

नारद—लैं, ई सबटा निर्वाचन हमहीं सब क' लैत छी।

निर्लोभ—जे हो! त नारद जी, सभक विषय मे साल भरिक रिपोट-तिपोट त अछिये अहाँ क पास, तखन अहीं ठीक क' लेब ककरा-ककरा छाँटै पड़त। हँ, एहि बेरि नन्दी जी कें कार्यकारिणी क सदस्य बना दियन्हु।

नन्दी—नहि नहि, हमरा कियैक?

निर्लोभ—देखू नन्दी जी! हमरा एखन संघ मे आपन लोग किछु चाही।

पछिलुका साल किछु गलत लोग कें लेला सँ बड़ कष्ट भेल छल।

नारद—हुनकहि सभक प्ररोचना सँ किछु पत्र-पत्रिका हमरा सभक विरोध मे लिखलक अछि।

निर्लोभ—भने अहाँ मोन पाड़ि देलहुँ। निर्मल जौं ऐताह त मोन पाड़ि कए कहि देबन्हि जे एकटा छौंड़ा सँ, कि ने नाम थीक... हँ, 'सरल' वैह जे कविता करैत अछि, तकरा सँ हरिदेव झा क विरुद्ध जे लेख लिखबौलहुँ—से एहि बेरि क अङ्क मे द' देथि।

नन्दी—से की? ओैह गत अङ्क मे त हुनक प्रशस्ति कैल गेल छलन्हि!

नारद—तैं लिखल त नहि गेल रहन्हि जे कहियो निन्दा नहि कैल जैतन्हि। गत मास धरि ओ ठीक छलाह। एम्हर आबि कए हमरा सभक विरुद्ध अंट-संट बाजै लागलाह। निर्लोभ जी सन नेता क विषयहु मे तेहन ने निन्दात्मक बात सब कहलन्हि जे जुनि पूछू।

निर्लोभ—आ' हुनक पुस्तक क लेल जे पाइ पठैबाक बात छलन्हि से पठौलियन्हि नहि ने?

नारद—जी नहि!

निर्लोभ—तखन ठीक अछि। तकरो बन्द करू! देखैत छियन्हि ओ कत्तेक दूर जाइत छथि।

नारद—से हम बूझि गेलहुँ! एखन [इङ्गित सँ भरत कें देखा कए।] संघक आफिस क विषय मे...

निर्लोभ—हँ; [भरत सँ] भरत बाबू!

भरत—[दुनू ठेंगहुन पर माथ धरने दोसर दिसि मुँह घुरा कए बैसल रहथि, किन्तु निर्लोभ जी क बजाहटि सुनि कए हुनकहि दिसि देखैत छथि।] जी!

निर्लोभ—सुनलहुँ अहाँ ई घर खाली क' रहल छी।

भरत—आइ दू महीना सँ नौकरी नहि अछि। ने खैबाक ठीक अछि, ने रहबाक। मालीक नोटिस देने अछि। उधार-करज क' कए कहुना जानकी क इलाज......।

नारद—से सब नहि पूछने छथि। पूछलन्हि जे की अहाँ सत्ये...

भरत—हँ, खाली त एक समय करैयेटा पड़त। ई घर राखब त एखन हमरा लेल विलासिता हैत।

निर्लोभ—तखन त ठीके अछि। एहन जगह कत्तहु नहि भेंटत। सब कें चिन्हलो छैक आ' ई शहर क मध्य भागो मे पड़त।

भरत—ई घर अहाँ ल' रहल छी की ?

निर्लोभ—नहि, संघ लेत।

नारद—से एक्के भेल।

निर्लोभ—छोड़बाक पहिने जौं अहाँ मालीक सँ कहि...

भरत—हम हुनका कोन मुहें कहबन्हि ? ई दू-तीन मास क भाड़ा त द' नहिये सकलियन्हि ! हमर बात ओ सुनताह कियैक ?

निर्लोभ—से ई कैक मास क भाड़ा संघ क दिसि सँ द' देल जैतैक। ताहि लेल चिन्ता नहि करू! एखन त कत्तहु घर भेंटबे मोसकिल होइत छैक! से भेंटनहु पगड़ी त देमै पड़िते छैक! त कहिया धरि अहाँ खाली करब ?

भरत—जहिया धरि हमर सबटा आस क तार टूटि नहि जाय।

नारद—तकर माने ?

भरत—जा धरि अहाँ चारि गोटें हमरा सहायता करब बन्द नहि क' देब।

नन्दी—नहि नहि, से कियैक ? [नारद क्रुद्ध दृष्टियें नन्दी दिसि ताकैत छथि। नन्दी चुप भ' जाइत छथि।]

निर्लोभ—हम सब कोना अहाँ क सहायता करब ? अहाँ क चारि-पाँच मासक बाकी भाड़ा त हम सब दैये रहल छी !

भरत—संघ ई घर लेत, ताहि लेल हमरा कोनो क्षोभ नहि। जखन कहियो छोड़ै पड़बे करत संघे क लेल कियैक नहि छोड़ू ? तखन नारद जी कहने छलाह जे जौं अहाँ चाही त हमरा संघ क ओ स्थायी कर्मचारी क नौकरी भेंटि सकैत अछि। [एहि बात पर निर्लोभ आ' नारद अपना मे दृष्टि विनिमय करैत छथि।] तँ अपने जौं चाही... त...

निर्लोभ—[गला कें खखारैत] बात ई छैक जे एहि छोट पदक लेल अहाँ कें...

भरत—नहि नहि; एहि मे हमर आत्म-सम्मान क कोनो बाते नहि; पेट मे अन्न रहय तखन ने से चिन्ता होइत छैक !

नारद—[माथ हँसोथि कए] नहि, माने निर्लोभ जी कहैत छलाह जे अहाँ एहि काज क योग्य... माने, ई काजो अहाँ योग्य नहि अछि।

भरत—तकर माने, हमरा ई काज नहि भेटत...?

निर्लोभ—[टोकैत] असल बात ई थीक जे [सब क्यो हुनका दिसि ताकैत छथि। ओ किछु थम्हि कए कहैत छथि।] अहाँ त जानिते छी जे मिथिला मे कत्तेक युवक अहिना बैसल छथि। तें हम सब ठीक कैने छी जे एहि पद पर एहन कोनो युवक कें राखी, जकरा बेसी पढ़बाक सुविधा नहि भेंटल हो ! देखियौक ने— ओकरो त जीबाक छैकै !

नारद—तकर अलावे हम सब चाहैत छलहुँ जे जकरा राखी, ओ सब दिन रहय, किछु दिन काज क' कए छोड़ि नहि दैक।

निर्लोभ—ठीक ! [नारद क दिसि प्रसन्न दृष्टियें देखैत] आ' अहाँ कें त काल्हि नीक नौकरी भेंटत त अहाँ चलिये जायब। तकर अलावे काज एहन ने अछि जे...

भरत—की एहन काज अछि जे हम नहि क' सकब ? एत्तेक दिन सँ संस्था मे छी, कोन बात हमरा सँ गुप्त नहि रहल आ' कोन गुप्त बात हम नहि जानलहुँ ? तें...

निर्लोभ—काज माने इयैह चिट्ठी पत्तर लिखै पड़त आ . !

भरत—हमरा सँ त पत्र क माध्यमे सब सँ सम्बन्ध अछिये। सैह कनेक बेसी करै पड़त।

नारद—नहि नहि; आसल त हिसाबे-किताब सम्हारब...!

भरत—एतबाक कियैक नहि क' सकब ?

नारद—[माथ नोचैत] नहि माने परिश्रम त डबल करै पड़त कि नहि, तें !

भरत—डबल परिश्रम माने ?

नारद— माने इयैह— ध' लियह, जौं अहाँ कें दू बेरि कए हिसाब क खाता लिखै पड़य— असल आ' नकल।

भरत—[विस्मित भए] तकर अर्थ ?

निर्लोभ—देखियौक ने— टैक्स-तैक्स क लेल किछु बाम-दहिन करै पड़िते छैक, किछु एडजस्ट करैयेटा पड़ैत छैक।

नन्दी—मुदा तकर अर्थ त लोग कें ठगब भेल ?

नारद—नन्दी जी ! [डाँटबाक स्वर मे] जानैत नहि छी, ताहि विषय पर कियैक बात करैत छी ?

भरत—ओ कोन अन्याय बात कहलथिन्ह ? लोग सँ जे टाका लेल जाओत, तकर दूटा हिसाब राखने त सन्देह भैये सकैछ...।

नारद—सन्देह ? 'निर्लोभ' जी सन नेता पर सन्देह करैत छी अहाँ ?

भरत—आइ लोग भगवानो पर सन्देह करैत अछि।

निर्लोभ—बात ई अछि भरत बाबू— पाइ हम छूबिते नहि छियैक ! तखन हमरा विचारें संघ क जे एकनिष्ठ कार्यकर्त्ता छथि, जे आपन व्यक्तिगत काज क क्षति सहियहु कए संघ क काज करैत छथि, तनिका लोकनि कें जौं ताहि सँ किछु नहि भेंटन्हि त...! तकर अलावे जे सब हमरा सब कें बेसी पाइ दैत छथि, कखनहु-कखनहु इनकमे-टैक्स बला सभक डरें ओ सब आपन नामो नहि देखाबै चाहैत छथि। तें...

भरत—ई त सरासरि चोरी थिक।

नारद—[गरजैत] भरत बाबू ! ककरा की कहि रहल छी ?

भरत—ठीके कहि रहल छी। ओह !! [दुनू हाथ सँ मुँह झँपनें] हे ईश्वर ! दिनोदिन हमर चारूकात क पृथ्वी एतेक कुत्सित कियैक होइत जा रहल अछि ?

नारद—जकरा सब कें अहाँ चोर कहि रहल छी, अहूँ ताहि सब मे सँ बाद नहि जाइत छी !

भरत [चौंकैत] की ?

नारद – हँ; अपने क पुस्तक क हेतु अपने कें जे पाइ देल गेल छल, सेहो वैह [क्रूर जकाँ हँसैत] दू नम्बर ऐकाउन्ट क। से लेब' मे त अहाँ कें द्विधा नहि भेल।

भरत – ई... ई जौं हम जानितहुँ, त ओहि पुस्तक क काँपी सबटा कें आगि मे फेंकि दितहुँ। छी... छी! कत्तेक लज्जा क बात!

नारद— और सोचि कए देखू— अपने गत वर्ष एकटा चन्दा क रसीद बही हेरैने छी। कोन ठीक अछि अहाँ तकर पाइ गायब कैलहुँ कि नहि।

भरत—नारद जी! मुँह सम्हारि कए बात करू! भरत मिसर भूखले मरि जायत, मुदा चोरी क पाइ पर पेट नहि भरत।

नारद—कोना कहू! ई दू मास बिनु खैनहि छी से त विश्वास नहि होइत अछि! पत्नी क चिकित्सा बिनु पाइ क होइत अछि से हो विश्वास नहि होइत अछि।

भरत—ई सब कोना भ' रहल अछि, से अहाँ कें कहि कए कोन लाभ? पुस्तकक लेल जे पाइ हमरा देने छी, ताहि पर हम थूकैत छी।

नारद—पाइ त खा गेलहुँ, आब शून्य मे थूकला सँ लाभे की?

भरत—जे टाका हमरा देने छी, तकर पाइ-पाइ हम घुरा देब!

नारद—कोढ़ि कें फुफकारे बड़।

निर्लोभ—नहि नारद जी, अहाँ हिनक क्रोध क कारण नहि बुझलहुँ। हिनकर ओही ऐकाउन्ट सँ हिनक दुइ मास क भाड़ा क संगे संग आरो किछु द' दियन्हु! मैथिली आन्दोलन मे हिनक अवदान कें हम सब कोना बिसरि सकैत छियन्हि?

भरत—बन्द करू एहन सब बात! [निर्लोभ कें] अहाँ आपन ओहि घृणित ठोर सँ आन्दोलन सन पवित्र शब्द क उच्चारण जुनि करू।

निर्मल—[नेपथ्य सँ हपसल जकाँ] नारद भाइ, नारद भाइ। [प्रविष्ट भए] नारद भाइ! निर्लोभ जी!!! हमरा सभक जीत भ' गेल। सरकार मानि लेलक। आब हमरा सभक भाषा, संस्कृति आ' साहित्य कें क्यो नहि

दबा सकैछ— आब हमरा सभक एतेक दिन क आन्दोलन शेष भेल अछि।

नारद—सत्ये ? [बाहर कोलाहल क स्वर धीरे-धीरे स्पष्ट भ' रहल अछि, जेना बहुत लोग एम्हर आबि रहल होथि।]

निर्लोभ—ई त हैबे करत ! जतय धर्म अछि, ततय जय नहि हैत त और कतय हैत ? [एतबा मे बाहर कोलाहल क शब्द तीव्रतर भ' उठैत अछि।]

नन्दी—ई कोलाहल क शब्द कतय भ' रहल अछि ?

नारद—मरिसक आस-पड़ोस क मैथिल भाइ-बन्धु लोकनि निर्लोभ जी कें सम्मान प्रदर्शन क हेतु आबि रहल छथि।

निर्मल—हमरा सभक नवजात अधिकार क लेल खुशी मनाबै आबि रहल छथि सब क्यो !

नारद—[कोलाहल क शब्द घर क पास आबि गेला उत्तर] देखू त के सब छथि। [निर्मल जैबा लेल उद्यत होइत छथि।] अच्छा, ठहरू; हमहीं जा रहल छी। [द्वार क पास जाए] अरे, ई के छथि ? [एतबा मे अस्त-व्यस्त जकाँ सुधीर क प्रवेश।]

सुधीर—[दरबाजा क सामने नारद कें देखि] भरत कतय छथि ? [कहैत-कहैत अगुआ कए भरत कें देखि] भरत ! सर्वनाश भ' गेल अछि !

भरत—[भावशून्य जकाँ मुख घुरा कए] आब कोन सर्वनाश बाकी अछि ? अहाँ कोन नव खबर देमै आयल छी सुधीर दा' ?

सुधीर—[आँखि मे नोर आबि जाइत छन्हि।] भरत ! सन्तानक जन्म त भेल, मुदा तकर बाद... जानकी ! सब शेष भ' गेल अछि भरत। [बाहर सँ आबैत सब कोलाहल अकस्मात बन्द भ' जाइत अछि—] जानकी नहि अछि भरत। जानकी बहिन विदा भ' गेलीह ! [ठीक ओही समय एकटा पुरुष-कंठ सँ 'जानकी' क नाम ध' कए एकटा तीव्र चीत्कार सुनल जाइछ। सुधीर आ' भरत के छोड़ि आन सब क्यो जड़ीभूत भ' जाइत छथि। ओहि चीत्कार क प्रतिध्वनियो एक समय चुप भ' जायत, संगहि

संग भरत हँसब शुरू करत। भरत क हँसी क संग कोलाहल क शब्द पुनः धीरे-धीरे बढ़ै लागत। सुधीर बर्धित कोलाहल आ' भरत क पागल जकाँ हँसी क दृश्य सह्य नहि क' सकैत छथि। ओ भरत क नाम ध' कए एक बेरि पुकारैत, ओकरा होश मे आनबाक लेल ओकर गाल पर एक थापड़ मारैत छथि।]

भरत—[भरत चुप भ' जाइत छथि एवं सुधीर कें दुनू हाथ सँ पकड़ि कए कहै लागैत छथि।] सुधीर दा', जानकी कहैत छल हमरा सभक एहि सन्तानक नाम राखू 'आन्दोलन'। [हँसैत-कानैत] कहू त कहू त कत्तेक विचित्र सौख छल ओकर। से देखू !!! हमरहि घर मे आन्दोलन भेल, जानकी क हेतु— आ' जानकिये नहि रहलीह ! कहू कत्तेक बड़का प्रहसन भेल ? तैं हँसब नहि त की ? [भरत पुनः हँसब शुरू करैत छथि और पागल जकाँ कहैत छथि।] "आन्दोलन भेल ; जानकी क लेल। आ' जानकी ? —चलि गेलीह ! [ई कहैत-कहैत हँसैत रहैत छथि। एहि बीच मे कोलाहल क स्वर सँ भरत क स्वर झँपा जाइत छन्हि। कोलाहल क मध्य नाराबाजी आरम्भ भ' जाइछ। उपस्थित अन्यान्य चरित्र सब एहि नाराबाजी मे योगदान दैत छथि। भरत क हँसी क्रमशः उच्चतरे भेल जाइत छन्हि। नारा क शब्द सब ताहू सँ मुखर भ' रहल अछि—

मैथिली भाषा जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद, जिन्दाबाद !!
हम्मर भाषा अमर हो ! अमर हो, अमर हो !!
मिथिला क नेता निर्लोभ जी, जिन्दाबाद, जिन्दाबाद !!

अट्टहास और नारा अद्भुत भावें मिश्रित भ' जाइत अछि।]

जवनिका-पात

लेखक परिचिति :

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

भाषाविज्ञानक साम्मानिक स्वर्णपदक प्राप्त स्नातक,
कलकत्ता विश्वविद्यालयक १९७२ क ईशान स्कालर।
भाषाविज्ञानक स्नातकोत्तर अध्ययनहु मे स्वर्णपदकप्राप्त।
एखन दिल्ली विश्वविद्यालयक भाषाविज्ञान विभाग मे
यू० जी० सी० फेलो।

एतावत् प्रकाशित ग्रन्थ :
कवयो वदन्ति (१९६६, मैथिली कविता-संकलन)
अमृतस्य पुत्राः (१९७१, मैथिली कविता-संकलन)
नायकक नाम जीवन (१९७१, मैथिली नाटक)
एक छल राजा (१९७३, मैथिली नाटक)
नाटकक लेल (१९७४, मैथिली नाटक)
प्रत्यावर्त्तन (१९७६, मैथिली नाटक)
रामलीला (१९७७, मैथिली नाटक)
आन्दोलन (१९७७, मैथिली नाटक)
जनक आ' अन्य एकांकी (१९७८, एकांकी-संग्रह)

स्थायी निवास :
ग्राम—सहमौरा, पोस्ट—शाहपुर बाजार, जिला—सहरसा।

वर्त्तमान पत्राचारक पता :
भाषाविज्ञान विभाग, आर्टस फैकल्टी एक्सटेन्शन,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-११०००७